जुलाई–अगस्त 2021

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगा

बाल पत्रिका

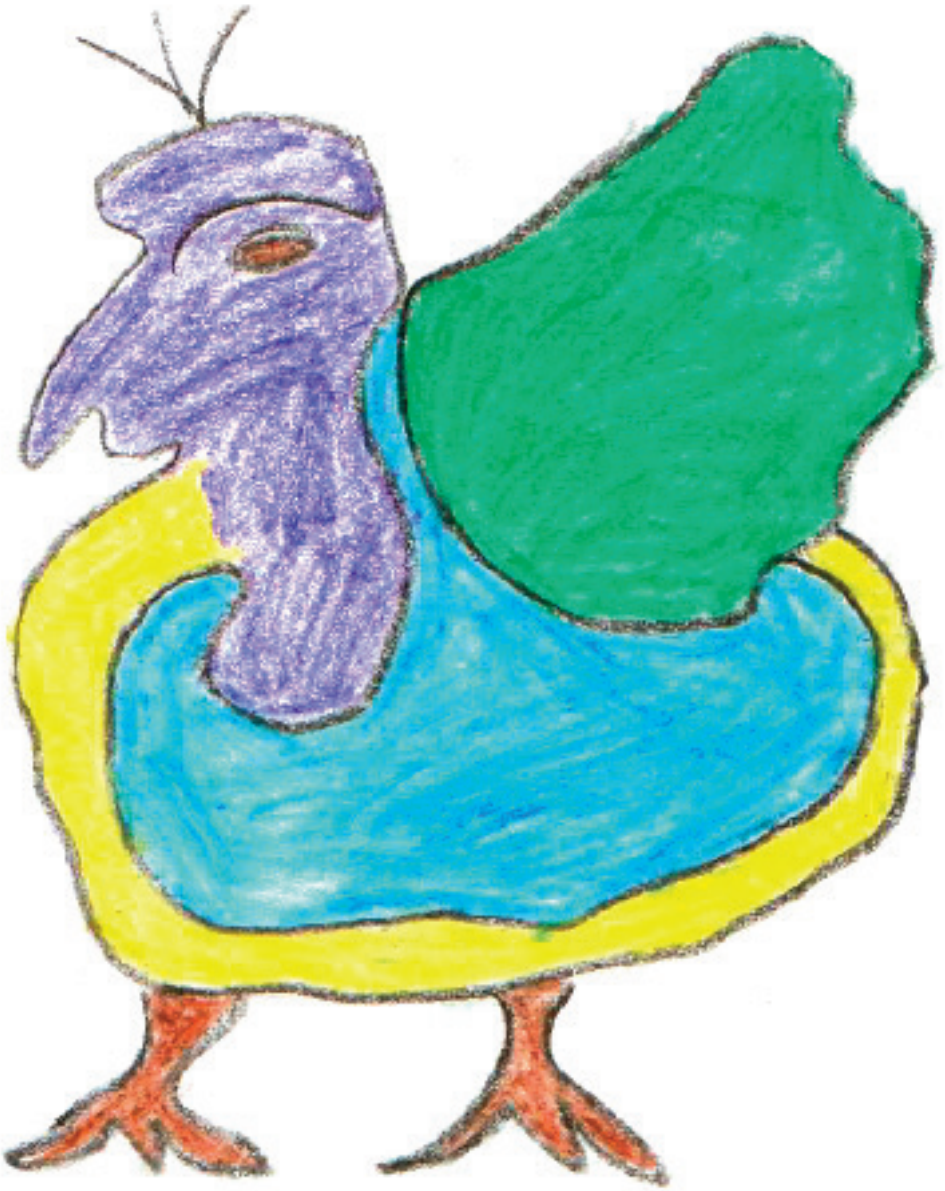

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 जीत का मरहम

6 इनाम

उड़ान

7 उस्ताद

8 तोता

9 रोटी–सब्जी / बम चिक बम

10 भट्टा

12 लोग तो कहते रहते हैं

ज्ञान विज्ञान

14 क्षय रोगी (टीबी) के अनुभव

जोड़–तोड़

21 एक से सौ तक जोड़ो

कलाकारी

22 गुलाब नहीं लगा

बात लै चीत ले

24 मन की मन में

25 माथापच्ची / हीहीही–ठीठीठी

26 कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ

भूमिका मीना, उम्र–9 वर्ष, समूह–संगम

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **रिंकु मीना**, उम्र–12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा
वर्ष 13 अंक 133–134

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

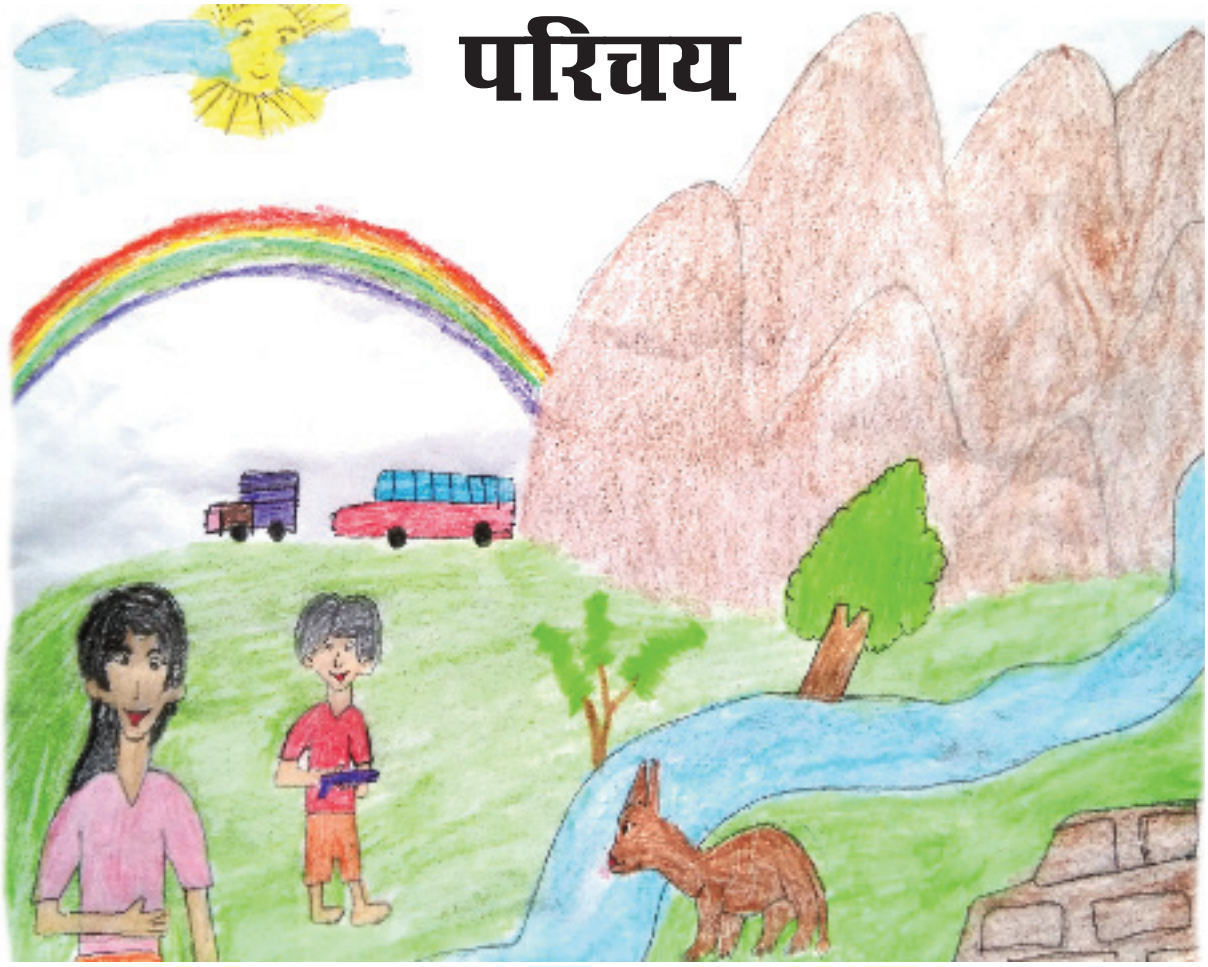

विकास बैरवा, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाषन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

खेल खिलाड़ी

जीत का मरहम

कृष्णा बैरवा, कक्षा–6, समूह–हरियाली

एक दिन मैं और सुनिता दोनों ही अपने गाँव से मस्ती करते हुए विद्यालय में पढ़ने के लिए आ रहे थे। सुनिता कह रही थी, ''आज तो हम ही जीतेंगे।'' जब हम विद्यालय में पहुँचे तो गुरूजी हमारा ही इंतजार कर रहे थे। मैंने उनसे कहा, ''गुरूजी, आप क्या कर रहे हो?'' गुरूजी ने कहा, ''हम खेल खेलने के लिए तुम्हारा ही इंतजार कर रहे थे। क्या तुम दोनों खेल खेलोगे?'' हमने कहा, ''हाँ, खेलेंगे।''

इसके बाद हमने खेल खेलने से पहले मैदान में दौड़ लगाई और फिर खेल शुरू किया। हम दो गोल से पीछे चल रहे थे उसी समय मेरे पैर में चोट लग गई और मेरे पैर की अंगुली में से खून बहने लगा। सभी लड़के और लड़कियाँ मेरे पास आकर खड़े हो गये। सुनिता ने भी मेरे पैर से खून निकलता देखा तो उसने अपने दुपट्टे को फाड़कर उससे मेरा खून पौंछा। फिर मेरे दवाई लगाई और पट्टी की।

सुनिता ने कहा, ''आरती तुम बाहर निकल कर आराम कर लो।''

मैंनें कहा, ''नहीं मुझे कोई परेशानी नहीं हो रही है, अगर मैं बाहर जाऊंगी तो अपनी टीम हार सकती है।'' मैं हिम्मत करके खेलने के लिए तैयार हो गई और हमारी टीम दो गोल से जीत गई। हम सभी खुशी–खुशी मैदान के बाहर आ गये। इस जीत से मैं अपना दुःख भी भूल गई।

आरती नायक, समूह–लहर, उम्र–8 वर्ष

इनाम

धनवंती सैनी, कक्षा–9, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

मैं खेलने के लिए सवाई माधोपुर जा रही थी। माधोपुर में मैंने देखा कि वहाँ पर बहुत सारी लड़कियाँ, औरतें और आदमी भी थे। वहाँ मेरी मम्मी और मेरा भाई भी आ गया था। मैंने मम्मी से कहा, ''मम्मी आप कब आई?'' मम्मी ने कहा, ''मैं तो तेरा खेल देखने अभी आई हूँ।'' हमने देखा कि वहाँ लड़के भी खेल रहे हैं। वे सब लड़के हैण्डबॉल खेल रहे थे। हम भी वहाँ खेलने लग गये। जब हमारी टीम जीत गई तो हमें इनाम में एक चांदी की मूर्ति मिली। मूर्ति को लेने के लिए सब झगड़ने लगे। हम सबने फैसला किया कि इस चाँदी की मूर्ति को कोई भी लेकर नहीं जायेगा। हम इस मूर्ति को स्कूल में ही रखेंगे। फिर उस मूर्ति के लिए कोई भी नहीं लड़ा।

आरती नायक, समूह–लहर, उम्र–8 वर्ष

उस्ताद

एक मोरनी आई।
संग में दो बच्चे लाई।
एक नाचने में उस्ताद।
एक बोलने में आसान।
मम्मी देखकर खुश हुई।
सीख गये जी सीख गये।
हमारे बच्चे सीख गये।

पपीता मीना,
उम्र–14 वर्ष, समूह–सितारा

गोविंद नायक,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–हरियाली

तोता

कितना सुंदर तोता आया।
घूम घाम कर तोता आया।
सुबह–सवेरे तोता आया।
घौंसले से उड़ता आया।
बच्चों के संग तोता आया।
दाना लेने तोता आया।
बाग बगीचों में तोता आया।

फल–फूल खाता आया।
हंसता–गाता तोता आया।
फर–फर करता तोता आया।
हरियाली से तोता आया।
फूलों के रंग लेता आया।
तोता आया तोता आया।।

दीपिका, आरती,
कक्षा–8, उदय सामुदायिक
पाठशाला जगनपुरा

खुशबू,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–संगम

रोटी–सब्जी

दौड़–भाग लगाओ।
रोटी सब्जी खाओ।
ऊपर से दूध पिओ।
सीना तुम फुलाओ।
ताकत तुम दिखाओ।
मेहनत करो और
रोटी सब्जी खाओ।

महेन्द्र नायक,
समूह–हरियाली, उम्र–14 वर्ष

काजल बैरवा,
उदय सामुदायिक
पाठशाला फरिया

शीतल बैरवा, उदय सा. पाठशाला

बम चिक बम

एक हाथी आया बम चिक बम।
केला खाया गप्प चिक गप्प।
कदम बढ़ाया छप्प चिक छप्प।
पैर फिसला रप चिक रप।
हाथी गिरा धम चिक धम।
मुँह से निकला हम चिक हम।

पपीता मीना,
उम्र–14 वर्ष, समूह–सितारा

अंकिता मीना,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–सितारा

भट्टा

एक बार की बात है। एक गांव था। उस गांव का नाम राजनपुरा था। उसमें बहुत सारे लोग रहते थे। वे लोग बहुत गरीब थे। उस गांव में एक आदमी रहता था। उसका नाम भट्टा था।

एक दिन वह आदमी खेत में काम करने जाता है। भट्टा खेत में काम कर रहा था कि उसे एक जानवर दिखा। वह डर कर भागना चाहता था कि जानवर ने कहा,

गोलु गुर्जर, समूह–झरना, उम्र–11 वर्ष

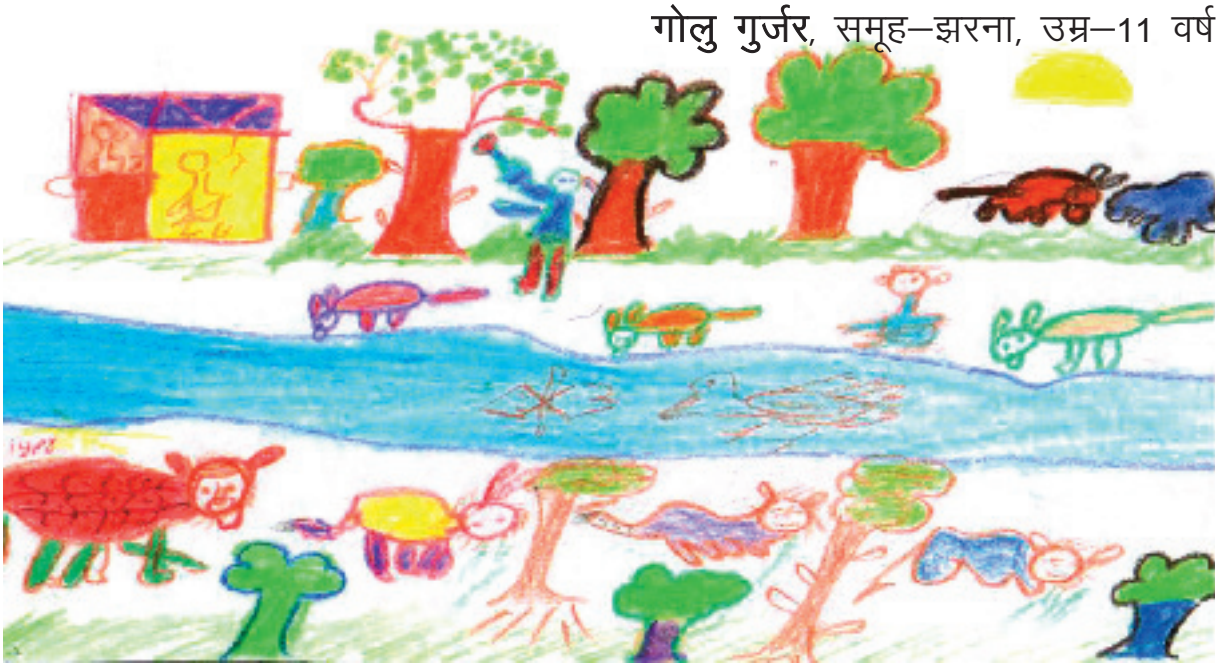

''मेरा एक काम करोगे? तुम जो चाहोगे मैं तुम्हें दूंगा।'' आदमी काम करने के लिए राजी हो गया और कहा, ''क्या करना है?''

जानवर कहता है तुम्हे मेरे साथ जंगल में चलना होगा। आदमी कहता है, ''अगर तुम मुझे खा जाओगे तो?''

जानवर ने कहा अगर मैं तुम्हें खाना चाहूँ तो यहां पर भी खा सकता हूँ। आदमी जानवर के साथ जंगल में चला जाता है। जंगल में देखकर उसका हृदय दुःख से भर जाता है। अकाल के कारण जंगल का पानी सूख चुका था। प्यास के कारण बहुत सारे जानवर मर चुके थे। बहुत से जानवर घायल थे और तड़प रहे थे। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह उनकी कैसे मदद करे।

पानी का तालाब दूर था और कोई भी चल नहीं सकता था। वह जानवरों को उठाकर भी नहीं ले जा सकता था। तभी उसे कुछ सूझा और वह बहुत तेज दौड़ता हुआ अपने घर गया। गांव में जितने भी पाईप थे वो एकत्र किए और एक बैलगाड़ी

में इंजन के साथ लादकर तालाब पर पहुंचा। उसने तालाब से लेकर जानवरों तक पाईप बिछाए और इंजन को तालाब में रख कर स्टार्ट कर दिया। कुछ समय में तालाब का पानी पाईप की मदद से जानवरों तक पहुंच गया।

उसने एक एक जानवर को उठाकर पानी पिलाया। जो नहीं उठ सका उसके मुँह में अपने हाथों से पानी डाला। कुछ ही देर में तडप रहे जानवरों की जान में जान आ गई। हालांकी बहुत सारे जानवर मर चुके थे लेकिन काफी को भट्टा ने बचा लिया। अब वहां के जानवर सही थे।

भट्टा की सेवा से सभी जानवर बहुत खुश थे। उन्होने उसे सेवा के बदले इनाम देने की सोची। उन्होने तयः किया की वह मरे हुए जानवरों के दांत, हड्डी और खाल ले जाये। पर भट्टा ने लेने से मना कर दिया। जानवरों ने उसे समझाया कि ये अब मर चुके हैं। पर तुम्हारे बहुत काम आ सकते हैं। अन्त में आदमी ने जानव. रों की बात मान ली और वहां से वापस आ गया।

राजबाला सेन, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

वापस आने के बाद भट्टा ने जानवरों की खाल, दांत, सींग, हड्डी सब बेच दिया। उससे जो पैसे मिले उनसे भट्टा ने जंगल में तालाब बनवाए, नहर खुदवाई और ऐनीकट बनवाए, ताकी जंगल में पानी की कमी न हो। इस तरह भट्टा ने जानवरों का पैसा जानवरों की भलाई के लिए खर्च कर दिया और खुद भी गांव छोडकर जानवरों के साथ रहने लगा।

अब भट्टा जानवरों की सेवा करता और जानवर भट्टा की सेवा करते।

रिंकु मीना, उम्र–11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

लोग तो कहते रहते हैं

एक गाँव था। उस गाँव में एक लड़की रहती थी। वह लड़की बहुत ईमानदार थी। वह उसके गाँव में से एक ही लड़की थी जो पढ़ने जाती थी। उसे सब गाँव वाले चिढ़ाते थे कि देखो यह चली मा. स्टरनी पढ़ने। वह लड़की उनसे कुछ भी नहीं कहती और चुपचाप स्कूल आ जाती। परेषान होकर एक दिन उसने सर से कहा, ''सर मैं कल से पढ़ने नहीं आऊंगी।''

सर ने समझाते हुए कहा, ''कोमल तुम उन लोगों के साथ मत लगो। लोग तो कुछ भी कहते रहते हैं।''

तो फिर कोमल ने कहा हाँ सर लोग तो कुछ भी कहते रहेंगे। कोमल ने अपना सारा ध्यान पढ़ाई पर लगा दिया। वह उसकी कक्षा में सबसे ज्यादा हो. शियर हो गई थी।

एक दिन कोमल जब स्कूल से घर गई तो कोमल ने देखा

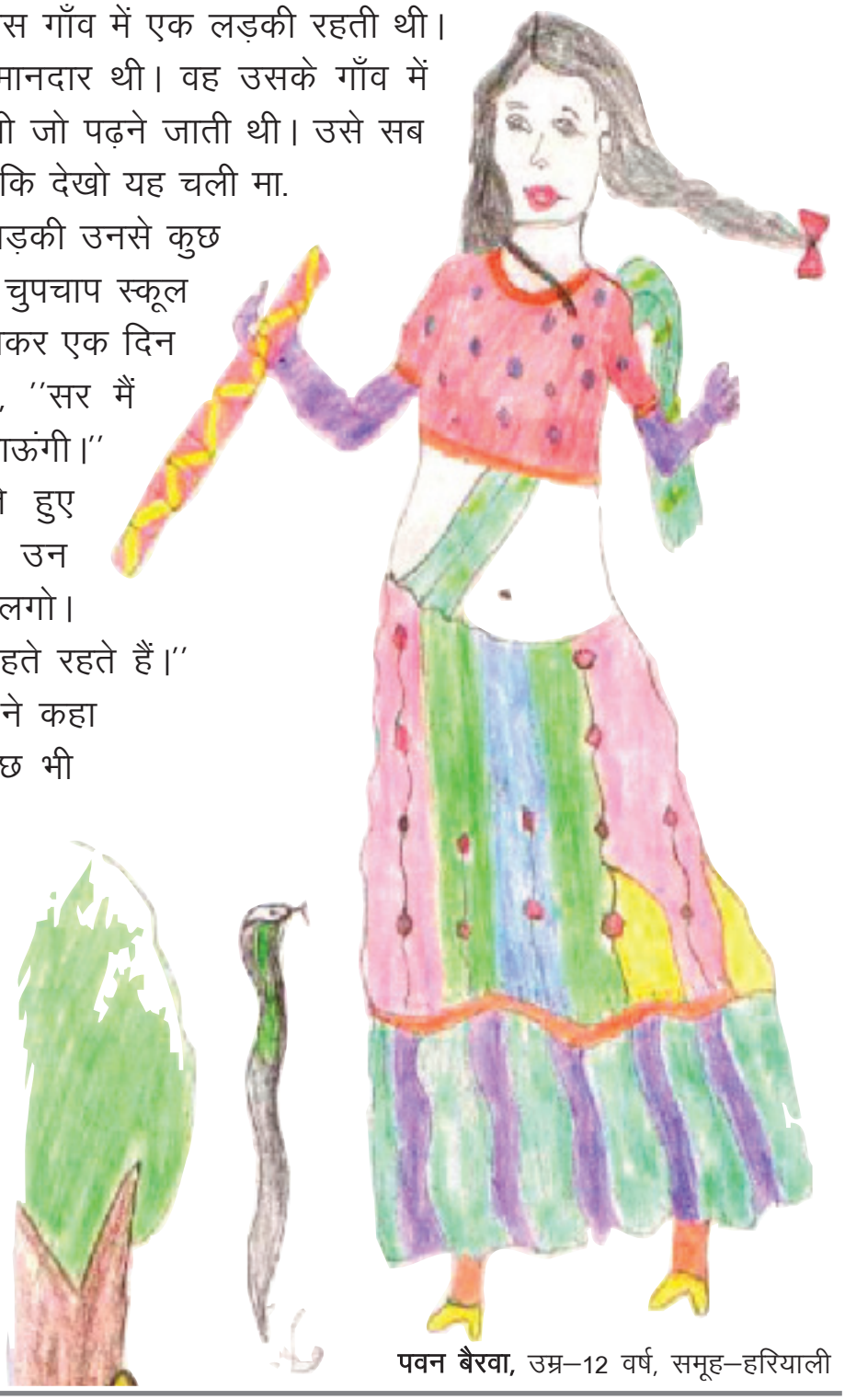

पवन बैरवा, उम्र–12 वर्ष, समूह–हरियाली

की उनके घर में कुछ मेहमान आए हुए है। कोमल की मम्मी ने कहा, ''बेटी पढ़कर आ गई क्या?'' उसने कहा ''हां मम्मी मैं पढ़कर आ गई हूँ।''

कोमल ने पूछा, ''मम्मी अपने घर ये मेहमान कौन हैं?''

मम्मी ने कहा, ''ये तुम्हारी सगाई के लिए आए हैं।'' मम्मी की बात सुनकर कोमल कमरे के अंदर जाकर रोने लगी।

''मैं अभी शादी नहीं करूंगी।'' उसने उसकी मम्मी से कहा। उसकी मम्मी ने समझाते हुए कहा, ''बेटी अपने गांव में सब लोग अपनी बेटियों की शादी कर रहे हैं।'' कोमल नहीं मानी तो उसकी मम्मी ने सगाई करने आये मेहमानों से कहा कि अभी मैं मेरी बेटी की शादी नहीं कर सकती। मेहमान वहाँ से चले गये।

ऐसे ही पढ़ते हुए दिन गुजरते गये। एक दिन कोमल ने कहा कि मम्मी कल जल्दी रोटी बनाना आज हमारी परीक्षा लगेगी। अगले दिन खाना खाकर वह परीक्षा देने निकल गई। कुछ दिन बाद पता चला की वह परीक्षा में पास हो गई और इस तरह वह मास्टरनी बन गई। उसे देखकर अन्य बच्चे व लड़कियाँ भी पढ़ाई करने लगी।

कृष्णा बैरवा, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

सुनीता, कक्षा–8, समूह–संगम

क्षय रोगी (टीबी) के अनुभव

फतेह एवं अभिषेक, कक्षा–4,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

लगभग दिपावली के समय से ही मुझे पैरों में थकान होने लगी थी। मैंने सोचा एक्सरसाईज ज्यादा हो रही है तो मैंने धीरे–धीरे मैदान के 12 चक्कर बंद कर दिये। पर थकान की समस्या कुछ खास नहीं मिटी। दिसम्बर खत्म होते–होते मैंने अपना 300 पुश–अप का लक्ष्य पूरा किया। जिसे हासिल करने के लिए मैं 2 साल से को. शिश कर रहा था। जिसे कुछ दिनों तक इंजोय करने के बाद और आगे ले जाना चाहता था। पर पैरों की थकान मुझे रोकने लगी। लिहाजा मैंने आगे बढ़ने का विचार त्यागकर कुछ समय आराम करना तयः किया। शाम को जगनपुरा और रावल के बच्चों को फुटबॉल खिलाना जारी रखा। क्योंकि हेमन्त के जाने के बाद इस सत्र में बच्चों को खिलाने की जिम्मेदारी मैंने अपने ऊपर ले रखी थी। बच्चों के साथ तो जोश में कुछ पता नहीं चलता था पर शाम को थकान से चेहरा उतर जाता था। किचन में खड़े रहकर खाना बनाना भी आसान नहीं होता।

अब तो मुझे बात असामान्य लगने लगी। मैंने कई लोगों से जिक्र किया। पर सबने बढ़ती उम्र को कारण बताया। जिसे मैं नहीं मान सकता था। मैं ठीक होते ही नये लक्ष्य पर जाना चाहता था। जिसमें मैं ऑफिस से जगनपुरा तक बिना रूके दौड़ते हुए जाना चाहता था। इन्हीं दिनों मेरी गर्दन पर एक गांठ महसूस हुई। मैंने इसे हल्के में लिया। पर बाद में 2 और छोटी–छोटी गांठ भी पता चली। लोगों से

कहा पर कुछ किया नहीं। एक दिन नरेश के कहने पर हीमोग्लोबीन की जांच करवाई तो 11 आया तो सोचा थकान का कारण यही है। आयरन की गोलियाँ खाई तो ठीक लगा पर मन का वहम मिटाने के लिए अस्पताल चला गया और डॉक्टर को अपनी गांठ दिखाई। उसने एक्सरे, ब्लड टेस्ट और गांठ की जांच लिख दी। तीनों जांच की रिपोर्ट दूसरे दिन डॉक्टर को दिखाई तो उसने कहा आपको टीबी है। सुनकर यकीन नहीं हुआ। दिनभर टीबी हॉस्पिटल, डिस्पेंसरी और आंगनबाड़ी के चक्कर लगाता रहा। मगर रजिस्ट्रेशन नहीं होने से दवाई नहीं मिली। इस बीच नेट से टीबी के कारण, लक्षण, प्रकार और उपचार के विषय में काफी कुछ जान चुका था। कल रात से ही मुँह सूखा–सूखा रह रहा था। पानी पीने के बाद भी सूखा ही है। मैंने आज से अपने बैग में पानी की बोतल रख ली है ताकि थोड़ा–थोड़ा पानी पीता रहूँ।

आवासन मण्डल की आशा सहयोगिनी को साथ लेकर हॉस्पिटल गया और अपना रजिस्ट्रेशन करवाकर टीबी की पहली खुराक ली। रोज खाना खाने के बाद 5 गोली खानी है। रविवार को हॉस्पिटल जाकर आगे की खुराब लेनी होगी। दवा आशा सहयोगिनी को ही दी जा रही है। मुझे दवा खिलाने, दिलाने और हॉस्पिटल ले जाकर जांच करवाने की जिम्मेदारी उसी की है पर मुझे ही उसे साथ लेना पड़ रहा था।

पहली खुराक लेने के बाद शाम को पेशाब करने गया तो खूनी पेशाब देखकर

चेतराम गुर्जर, कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

डर गया और पेशाब बीच में रोककर बाहर आ गया। बाहर राधेश्याम जी को बताया तो बोले कोई बात नहीं। दो तीन दिन में सब ठीक हो जायेगा। यह जानते हुए भी कि उनकी बातों का कोई आधार नहीं है फिर भी बड़ी राहत सी महसूस हुई। मैं बाथरूम में वापस गया और पूरा पेशाब किया जो खूनी था। मैंने पहली बार खूनी पेशाब किया था। इसके पहले कभी सुना भी नहीं था।

आज शाम तक ऑफिस में मैंने सबको बता दिया था। पर हमेशा की तरह इस बार भी घर पर किसी को नहीं बताने का फैसला किये बैठा हूँ। मगर लगता नहीं कि इतना लम्बा इलाज मैं छिपा सकूंगा। एक न एक दिन तो पता चल ही जायेगा।

आज रात में ख्याल आया कि कहीं यह बीमारी मीरा और बच्चों को न हो। तुरन्त मीरा को फोन लगाया और खुद की जांच करवाने के लिए कहा। यदि उसे कुछ हुआ तो फिर बच्चों की भी जांच करवानी होगी। पता नहीं ये बीमारी कब, कहाँ, किससे लगी है।

ऊपर से तो बहादूरों की तरह सब कुछ भुलाकर सब से हंस बोल रहा हूँ, मगर एकान्त मिलते ही चिन्ता घेर लेती है। शायद इस नई स्थिति के साथ सामान्य होने में कुछ दिन तो लगेंगे ही। कल सुबह भी खूनी पेशाब आया तो डॉक्टर के पास जाने का निर्णय किया। पर 10 बजे का पेशाब सफेद आया तो राहत महसूस हुई। राधेश्याम जी से बात की तो उन्होंने बताया कि, ''मेरे जीजाजी को भी टीबी हुई थी। यह लाल रंग की दवाओं के कारण है। आज सुबह से ही एक तौलिया मुँह ढकने के लिए गले में डाल लिया ताकि मेरे कारण किसी को भी असुविधा न हो।

दोपहर की गोली के बाद फिर से लाल पेशाब आया। अब मैंने इसे नॉर्मल लेना शुरू कर दिया। लोगों की सलाह पर आज पानी भी खूब पीया। दोपहर से पेट में मरोड़ से उठ रहे थे। लंच में मूंग की दाल से 4 चपाती खाई पर शाम तक पची नहीं। इसलिए 2 टमाटर 1 प्याज की सलाद और एक कटोरी दाल खाकर थोड़ा टहला। मित्र डॉ. शिशिर ऑफिस आए। इनकी सलाह पर मैंने सरकारी अस्पताल में डॉ. हेमलता टटवाल को दिखाया था। उन्होंने जांच रिपोर्ट देखी तो एक्सरे में भी संक्रमण बताया। उनका कहना था कि मुझे एक डॉक्टर को और दिखाकर पक्का कर लेना चाहिए। चाहो तो शास्त्री नगर में टीबी हॉस्पिटल है। वहाँ दिखा लें या फिर प्राईवेट में जाओ तो नारायण में भी अच्छे डॉक्टर हैं। राधेश्याम जी ने कहा माधोपुर में ही कल दिखा लेंगे पुराना अनुभवी डॉक्टर है। आज बुरी तरह थक गया। नतीजा बिस्तर जाते ही नींद आ गई। रात को 12 बजे मरोड़ ने जगा दिया।

लेट्रिंग गया तो लेट्रिंग भी लाल ऊपर से दस्त हो गये। पूरी रात में 2 बार गया। अभी तो दूसरा ही दिन है। पता नहीं ये गोलियाँ अभी और क्या–क्या हाल करेंगी।

गोली लेते ही सर भारी हो जाता है। शाम को नींद भी जल्दी आ जाती है। अब गोलियों की आदत होने लगी है। भूख कम हुई है। अब मैं तीन रोटी से अधिक नहीं खा पाता। सोचता हूँ, शाम को रोटी की बजाय दूध–दलिया ही शुरू कर दूं।

दोपहर के बाद दवाई लेता हूँ। उसके एक घंटे बाद ऐसा लगता है जैसे कब्ज हो गई और उल्टी हो जायेगी। हांलाकि अभी तो ऐसा नहीं हुआ पर शाम को 8 बजे तक तो लगता ही नहीं कि कुछ खा सकता हूँ। इसलिए कई बार खाना भी नहीं बनता कुछ और सलाद वगैरह या दलिया बना लेता हूँ। परसों कार्यशाला में ढाई घंटे खड़े होकर सत्र लिया था जिसकी थकान से शाम को बुखार आ गया। कल तक भी पैरों में दर्द रहा। आज कुछ ठीक लग रहा है। शाम को घर जाना है। होली के बाद से अभी तक घर नहीं गया। टीबी की बीमारी सुनकर थोड़े परेशान हैं। देखना भी चाहते हैं कि कहीं कमजोर तो नहीं हो गया।

शाम को 7 बजे की ट्रेन थी इसलिए बचा हुआ दलिया खा लिया और सफर के

विजय गुर्जर, कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

लिए निकल गया। अब तक सब नॉर्मल होने लगा था। मैं सोचने लगा कि बस इसी तरह बिना नागा समय पर गोली लेते हुए 6 महीने गुजर जायेंगे और मैं पूरी तरह ठीक हो जाऊंगा। फिर मैं अपने नए प्लान पर काम करूंगा। इन्हीं सब विचारों में डुबकी लगाते हुए सवाई माधोपुर स्टेशन पहुँचा। रिजर्वेशजन नहीं करवा सकता था। इसकी दो वजह थी एक तो स्वभाव से मैं मितव्ययी हूँ ऊपर से मेरे प्लान भी उतने

पक्के नहीं होते हैं। दूसरा मुझे जयपुर से अलवर के लिए ट्रेन बदलनी होती है जो 10 मिनट के बाद निकल जाती है। ऐसे में मेरी जयपुर की ट्रेन थोड़ा भी लेट हुई तो रिजर्वेशन बेकार हो जायेगा और ट्रेन लेट होती रहती है।

खेर मैंने जर्नल टिकिट लिया और ट्रेन में चढ़ गया। शनिवार होने से भीड़ ज्यादा थी तो जयपुर तक खड़े–खड़े ही जाना पड़ा। मेरे लिए ये सामान्य बात थी पर अब मैं एक बीमार और कमजोर व्यक्ति था। पर खुद अपनी कमजोरी को कारण बनाकर लोगों से थोड़ी जगह मांगना मुझे पसंद नहीं। वैसे भी जर्नल बोगी में सब परेशान होते हैं ऊपर से मेरी बात पर यकीन कौन करेगा। दिखने में तो हट्टा–कट्टा था और मदद लेना मेरा स्वभाव भी नहीं था।

सफर जारी था कुछ समय बाद मुझे डकार आने लगी। जो बढ़ती ही जा रही थी। जयपुर आते–आते तो मैं परेशान हो गया। लगातार इतने समय तक डकार आना मेरे लिए नई बात थी। अब तक मैं इसे कमजोर स्वास्थ्य से होने वाली अपच मान रहा था। 10 मिनट बाद मुझे दूसरी ट्रेन मिल गई। इस बार मैं लपक के सीट लेने में कामयाब रहा। जनरल बोगी के मुसाफिर को इन सब चुनौतियों का सामना रोज करना होता है। इसलिए इसको वह तकलीफ नहीं मानता। मेरा सफर थोड़ा आरामदायक हो गया। डकार आना भी कम हो गया। कब्ज के डर से घर पहुँचकर भी मैंने कुछ नहीं खाया और सौ गया।

सुबह जब उठा तो खुद को थोड़ा ठीक महसूस किया। बहन से बात हुई तो उसने कहा, ''तुमको बिना भुना दलिया नहीं बनाना चाहिए था। ऊपर से सफर कर लिया। बिना भुना दलिया कब्ज करता है।'' मैंने सोच लिया कि अब से भूनकर ही दलिया बनाऊंगा। सुबह दूध, दलिया, बिस्कट जैसी हल्की चीजों का नाश्ता किया। अब तक मैं समझ चुका था कि टीबी की दवा लेने के बाद मेरी तबीयत खराब होने लगती है। नतीजा दवाई लेने का टाईम आते ही डर लगने लगा था। अभी 10 दिन ही हुए थे 6 महीने कैसे गुजरेंगे? हर आने वाले दिन के साथ मेरी हालत बिगड़ने लगी थी। दोपहर को लंच के बाद गोली ली और सोचने लगा कि आज क्या होगा? श्याम होते–होते कब्ज और डकार होने लगी। खाना खाना मुश्किल हो गया। अंधेरा होते–होते तो उल्टियाँ होने लगी। उल्टियाँ भी ऐसी की सांस ही टूट जाती। घर पर सब घबराने लगे थे। अगले दिन सब डॉक्टर को दिखाने की कहने लगे। मैंने कहा मेरा इलाज सवाई माधोपुर में चल रहा है और मैं तो दो दिन के लिए मिलने आया था। इसलिए कोई रिपोर्ट और पर्ची भी नहीं लाया। हर बार की तरह सुबह मेरी तबीयत ठीक थी तो मैंने ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया। अब मैं सोचने लगा कि आज कुछ नहीं होना चाहिए। पर हुआ वही जिसका डर था। कल से भी बुरा

हाल पेट खाली होने पर भी आतें बाहर आना चाहती थी। उल्टी रोकने की गोली मुझे दी गई पर उबकाइयाँ बंद नहीं हुई। रात 10 बजे तक मैं सामान्य होने लगा। मेरी दो दिन की छुट्टी भी खत्म हो चुकी थी इसलिए मैंने रात 12 बजे की ट्रेन से लौटने का फैसला किया। सबने कहा अभी–अभी तो उल्टियाँ रूकी हैं और तुम रात में ही अकेले जाना चाहते हो? सब की सलाह के विपरीत मैंने सवाई माधोपुर लौटने का फैसला किया। सबने कहा सुबह यहीं दिखा देते। कैसे जाओगे? मैंने कहा मेरी तबीयत गोली लेने के बाद बिगड़ती है। मैं दोपहर से पहले सवाई माधोपुर पहुँचकर डॉक्टर को दिखा लूंगा। पर सबका कहना था कि बहुत कमजोर हो गये हो, अकेले

विक्रम एवं अभिषेक, कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

कैसे करोगे, रास्ते में तबीयत बिगड़ी तो क्या होगा? वहां खाना कौन बनायेगा और फायदा नहीं हुआ तो क्या करोगे?

सबकी अपेक्षाओं के विपरीत मैं अकेला रात की ट्रेन से चला और सुबह 9 बजे सवाई माधोपुर पहुँच गया। शुक्र रहा रास्ते में कुछ भी गड़बड़ नहीं हुई। भूख लग रही थी तो रास्ते से ही अपना नियमित जो नाश्ता होता है वहीं लिया और आ गया। जिसमें दूध, अंडा था। पेट खाली था और भूख भी थी तो मैंने दो अण्डे ज्यादा ले लिये। अब मुझे ठीक लग रहा था। घर से फोन अया तो उनको भी बता दिया कि मुझे यहाँ अलवर से भी ज्यादा अच्छा लग रहा है। फिर भी मैं डॉक्टर के पास गया

और उनको पूरा हाल बताया। उन्होंने कुछ जांच की और कहा गर्मी से लीवर में सूजन हो गई है। एडमिट कर देता हूँ, भर्ती हो जाओ। मैंने कहा मेरे साथ कोई नहीं है, मैं भर्ती नहीं हो सकता। मुझे तबीयत भी ठीक लग रही है, आप दवा दे दो, फायदा नहीं हुआ तो मैं एडमिट हो जाऊंगा। डॉक्टर ने दवाई लिख दी और मैं मेडिकल से दवा लेकर ऑफिस आ गया। मैंने ऑफिस पर काम किया। मैं सो. चने लगा कि मुझे सवाई माधोपुर आते ही इतना ठीक क्यों लग रहा है? काफी सा. चने पर भी मुझे कोई कारण नहीं मिला। बस एक बात जो मन में आ रही थी वह थी नाश्ता। मैंने नाश्ते में तीन अंडे खाए थे। सोचते–सोचते मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि मैं नाश्ते में नियमित अंडे लेता हूँ और मुझे अलवर में ये नहीं मिला था तो मेरी तबीयत बिगड़ती चली गई। किसी को ये तर्क बचकाना लग सकता है पर मेरे पास अभी यही एक कारण था।

मेरे पास एक और सवाल था। वो ये कि जब 10 दिन हो गये दवाई लेते हुए और स्थिति लगातार सुधर रही थी फिर ये अचानक क्यों बिगड़ी? मैंने और पीछे जाकर देखा तो पाया कि सवाई माधोपुर में गुजर 10 दिनों में मैंने दो बार अपने स्टाफ के साथ चिकन भी खाया था। मुझे समझ आ चुका था कि कब्ज के कारण हल्का भोजन लेने का मेरा फैसला गलत था। इससे मेरे शरीर में गर्मी बढ़ी और लीवर पर भी असर हुआ। उल्टियाँ होने से मैंने और हल्का भोजन किया साथ में कम भी खाया जो मुझे और कमजोर करता चला गया। वापस आने पर अंडे खाने से मुझे तुरंत राहत मिली थी। अनजाने में नॉनवेज और अण्डों ने मेरी बहुत मदद की थी जो मुझे अलवर में नहीं मिले तो तबीयत बिगड़ती चली गई। ठीक लगने के कारण मैंने दोपहर में टीबी की दवा तो ली पर डॉक्टर की लिखी दवाई नहीं ली और भोजन वाली बात पर भरोसा करते हुए जानने का फैसला किया। श्याम को मैंने देखा मुझे दवाई नहीं लेने पर भी कोई डकार नहीं आई और न ही उल्टी हुई। बात साफ हो चुकी थी कि टीबी के ईलाज के दौरान मुझे हाई प्रोटीन भोजन की जरूरत थी जो मुझे अनजाने में सवाई माधोपुर में तो मिला पर अलवर में नहीं। क्योंकि मुझे समस्या का सही कारण नहीं पता था तो मैंने गलती से और हल्का भोजन किया। जिससे बात और बिगड़ गई।

अब मैं जान चुका था तो मैंने अपने भोजन में हाई प्रोटीन फूड को स्थाई रूप से लेना शुरू कर दिया। मुझे मछली बिल्कुल पसंद नहीं थी और उसमें कांटे होने के कारण मुझे खाना भी नहीं आता था। पर मैंने मछली खाना सीखा। इसके बाद मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई। 6 महीने तक समय पर बिना गलती दवाई ली और मैं टीबी से पूरी तरह ठीक हो गया।

जोड़–तोड़

एक से सौ तक जोड़ो

कार्ल फ्रेडरिक गौस (1777–1855) गणितज्ञों में राजकुमार कहलाते थे। वो जर्मनी में एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे पर गणित में उनकी विलक्षणता बचपन से ही साफ झलकती थी।

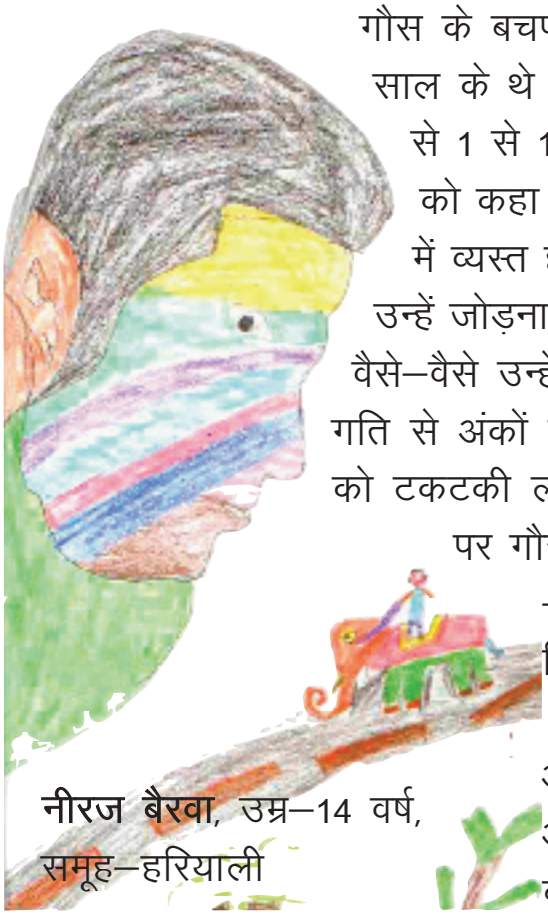

नीरज बैरवा, उम्र–14 वर्ष,
समूह–हरियाली

गौस के बचपन की एक रोचक कहानी है। जब गौस दस साल के थे तो स्कूल के मास्टर बटनर ने कक्षा के बच्चों से 1 से 100 तक के अंक लिखने को और उन्हें जोड़ने को कहा। बच्चों ने झट से अंक लिखे और उन्हें जोड़ने में व्यस्त हो गए। क्योंकि शुरू के अंक छोटे थे इसलिए उन्हें जोड़ना आसान था। पर जैसे–जैसे अंक बड़े होते गए वैसे–वैसे उन्हें जोड़ना मुश्किल होता गया। जब बच्चे तेज गति से अंकों को जोड़ने में व्यस्त थे तब कार्ल गौस अंकों को टकटकी लगाए निहार रहे थे। अंकों को गौर से देखने पर गौस को एक अद्भुत नमूना नजर आय। झट से – क्षण भर में कार्ल ने अपनी स्लेट पर उत्तर लिखा 5050

बाकी बच्चे पूरे पीरियड 1 से 100 तक के अंकों को जोड़ने में व्यस्त रहे। परन्तु कार्ल अपने हाथ मोड़े आराम से बैठा रहा और मास्टर बटनर उसे कटु निगाहों से घूरते रहे। पीरियड के अंत में केवल कार्ल का ही उत्तर सही पाया गया। यह पूछे जाने पर उसने समस्या का हल कैसे निकाला, कार्ल ने इन शब्दों में उत्तर दिया।

1 + 2 + 3..... 98 + 99 +100

मैंने पहले और अंतिम अंक को देखा। उनका जोड़ 100 + 1 = 101 था। फिर मैंने दूसरे और अंत से दूसरे अंक को देखा। उनका जोड़ भी 101 (2 + 99 = 101) था। तीसरे और अंत से तीसरे अंकों का जोड़ भी 101 (3 + 98 = 101) था। और यह नमूना पूरी श्रृंखला पर लागू था। और क्योंकि केवल 100 अंक थे तो उनकी कुल 50 जोड़ियां होंगी – जिनमें हरेक का जोड़ 101 होगा। इसलिए मैंने सिर्फ 101 को 50 से गुणा किया और मुझे 5050 उत्तर मिला।

स्रोत – अपने हाथ गणित

कलाकारी

गुलाब नहीं लगा

मैं आपको बताऊंगी की इतनी कोशिशों के बाद भी मेरा गुलाब क्यों नहीं लगा। 5 मार्च, 2020 को मेरे बड़े पापा जी का लड़का गुलाब का पौधा लगाने के लिए एक पौधा लाया। उन्होंने पौधे को छोटे–छोटे भागों में बांट दिया।

मैंने उनसे पूछा, ''भईया इसका क्या करोगे? अब वह कैसे उगेगा? इसकी तो जड़ ही नहीं है?''

तो वो बोले, ''अरे पागल, गुलाब के पौधे की जड़ नहीं लगती। इसे छोटे–छोटे भागों में काटा जाता है। फिर मिट्टी और खाद मिलाकर उन छोटे–छोटे टुकड़ों को मिट्टी के सहारे खड़ा करते हुए पानी डालते हैं।''

मैंने कहा, ''अच्छा तो भइया आप एक टुकड़ा मुझे भी दे दो। मैं भी पौधा लगाऊंगी फिर देखेंगे कि इसका पौधा उगेगा या नहीं।''

उन्होंने मुझे एक टुकड़ा दिया। जैसे भईया ने बताया मैने वैसे ही उस टुकड़े को लगा दिया। दो–तीन दिन तक तो कोई बदलाव नहीं आया। फिर बाद में छोटे–छोटे पत्ते भी आने लगे तो फिर मैं उन्हे देखकर बहुत खुश हुई। मैंने सारे दोस्तों को बताया।

अगले दिन मैं स्कूल गई हुई थी। तो मेरी मम्मी ने घास समझ कर उस पौधे को निकाल कर फेंक दिया। मैं वापस आई तो तुरन्त ही पौधे को देखने के लिए गई। पौधे को न पाकर मेरा मुँह उदास हो गया।

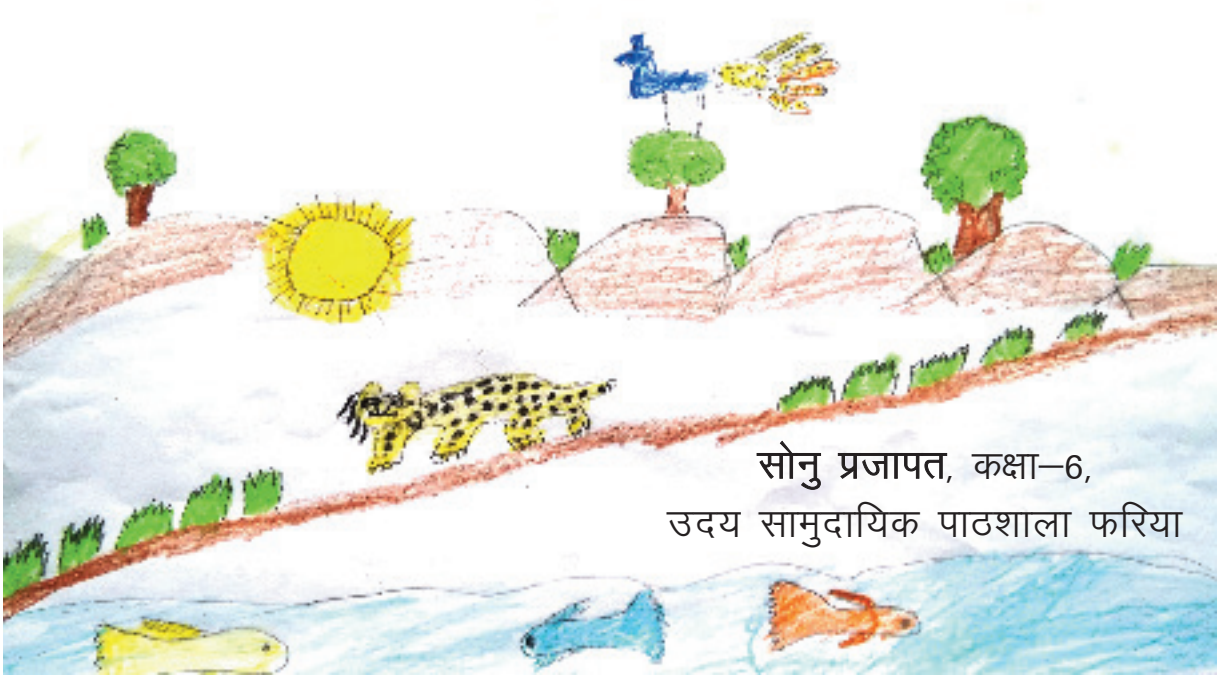

सोनु प्रजापत, कक्षा–6,
उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

किशन, उम्र–12 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

कुछ दिनों बाद मेरे भईया गुलाब का पौधा लाये और उन्हा. ने और मैंने मिलकर पौधा लगाया। पर यह क्या हुआ, जो दिन निकलते जाते त्यों ही वह पौधा सूखता जा रहा था। खूब पानी देते फिर भी पौधा सूख–सूखकर नष्ट हो गया। तब से मेरा पौधा लगाने का सपना, सपना बनकर ही रह गया। पर आज मुझे पता है कि वह पौधा क्यों नहीं लगा। इसलिए मैं जानती हूं की गुलाब का पौधा लगाने के लिए क्या नहीं करना चाहिए।

काजल बैरवा,
समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

प्रेमसिंह गुर्जर, कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

मन की मन में

हम हमारी पढ़ाई कर रहे थे। अचानक हमारी छुट्टी लगी तो हमें खुशी हुई। हमारे घर पर जाकर मम्मी–पापा को बताया कि हमारी छुट्टी लग गई है। एक बार तो उन्होंने नहीं माना। मुझे तो इतनी खुशी हो रही थी कि क्या बताऊँ। जब भी स्कूल की लम्बी छुट्टियाँ लगती थी तो हम हमारी नानी के घर जाते थे। मैंने मेरी मम्मी को राजी किया। मम्मी नानी की बहुत याद आती है कल चलोगे ना? मम्मी ने हाँ कर दी। फिर क्या था मुझे सारी रात नींद नहीं आई। मैंने अपना बैग शाम को ही तैयार कर लिया। पढ़ने की पुस्तकें भी रख ली। मेरे मन में बहुत खुशी हो रही थी कल तो नानी से मिलेंगे और उनसे कहानियाँ सुनेंगे। अगले दिन ही जब जाने की बात की तो पापा ने मना कर दिया कि बेटा हमारे देश में एक ऐसी बीमारी आ गई है जो एक दूसरे के छूने से, हाथ मिलाने से फैलती है। चारों तरफ बाजार बंद हैं, साधन बंद हैं, जायेंगे तो पुलिस वाले जाने नहीं देंगे। पुलिस वाले बाहर जाने वालों के डंडे मारते हैं। मैं डंडे की बात सुनकर डर गई। पापा की ये बात सुनकर उदास हो गई। इस तरह मैं नानी के नहीं जा सकी। मुझे आशा थी की थोड़े दिनों बाद चलेंगे। जब भी हमारी स्कूल की छुट्टियाँ लगती थी तो हम हमारी बुआ–नानी के जाते थे। अबकी बार हमने खूब कोशिश की लेकिन नहीं जा सके। इस कौराना बीमारी ने बाजार बंद करवा दिये, हमारी स्कूल बंद करवा दी, महीनों का लॉकडाउन लगवा दिया हमने नानी के जाने की बहुत सोची लेकिन ये बीमारी तो रूकने का नाम ही नहीं ले रही है। ये तो बढ़ती ही जा रही है। जब ये बहुत दिनों तक रूकी ही नहीं तो फिर मैंने सोच लिया कि अब तो अगली बार ही जाना पड़ेगा। इस करोना के कारण मेरे नानी के जाने की इच्छा मन की मन में रह गई।

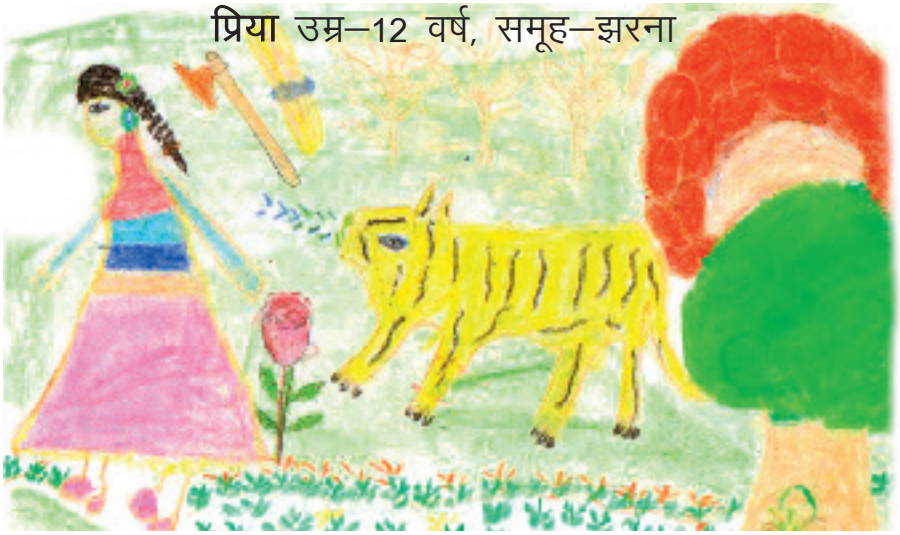

प्रिया उम्र–12 वर्ष, समूह–झरना

कोमल गुर्जर, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

महेन्द्र मीना, कक्षा–7, राजकीय विद्यालय, सांवलपुर

माथापच्ची

1. ऐसा क्या है जो बिना हाथ पैर के चढ़ता है और उतरता है।
2. दुकान से खरीदा, पीठ पर रखा, मोटा सा, छोटा सा परन्तु बड़े काम का।
3. ऐसी कौनसी चीज है जो साफ करने पर काली और गंदा करने पर सफेद हो जाती है।
4. डिब्बे के आगे डिब्बा, फुल है भरा, आगे लाल पीछे हरा।
5. एक वस्तु 1 घन्टा 20 मिनट 28 सैकिण्ड में सूखती है तो ऐसी ही 4 वस्तुएँ कितनी देर में सूखेंगी।

गोविन्द नायक, अमर मीना, समूह–सूरज, उम्र–12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला

हीहीही ठीठीठी

1. एक मच्छर परेशान बैठा था। दूसरे ने पूछा – भाई क्या हुआ तुझे?
पहला बोला – यार गजब हो रहा है। चूहेदानी में चूहा, साबुनदानी में साबुन, मच्छरदानी में आदमी सो रहा है। अब हमारा क्या होगा?

2. पुलिस पप्पू के घर का दरवाजा खटखटाते हुए।
पुलिस– हम पुलिस हैं दरवाजा खोलो।
पप्पु – क्यों खोलू?
पुलिस – आपसे बात करनी है।
पप्पु – आप कितने लोग हो?
पुलिस – तीन
पप्पू – तो तुम आपस में ही बात कर लो।

सत्यनारायण गोस्वामी, कक्षा–7, राजकीय विद्यालय, सांवलपुर

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

ज्योति, कक्षा–5
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

मेरी प्यारी गुड़िया रानी
पहन के साड़ी बने सयानी ....
विष्णु गोपाल, द्वारा शुरू की गई इस कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

जंगल में एक बूढ़ा हाथी रहता था। उसका घर तालाब के पास था। वह बहुत बूढ़ा था। इसलिए वह जंगल में घूम भी नहीं पाता था। वह तालाब के पास उगी हुई घास खाता था। एक साल जंगल में बरसात में जंगल का सारा घास सूख गया.....

गणेश मीना, कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

सफेदी, समूह–सागर, उम्र–11 वर्ष द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

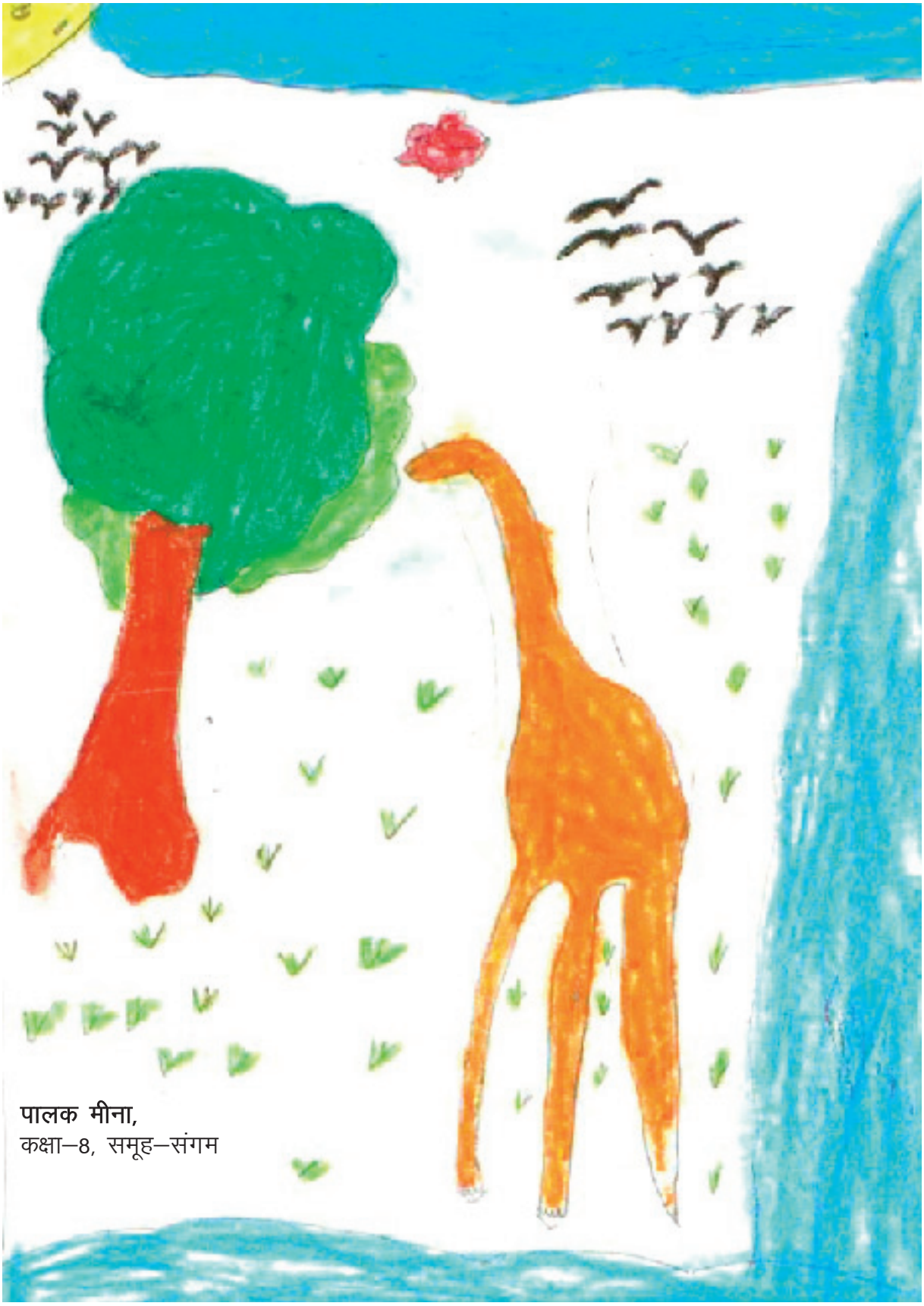

पालक मीना,
कक्षा–8, समूह–संगम

पहेलियों के ज़वाब –

1. बुखार 2. बैग 3. ब्लेक बोर्ड 4. ट्रेन 5. 1 घन्टा 20 मिनट 28 सैकिण्ड

रौनक, कक्षा–10, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा